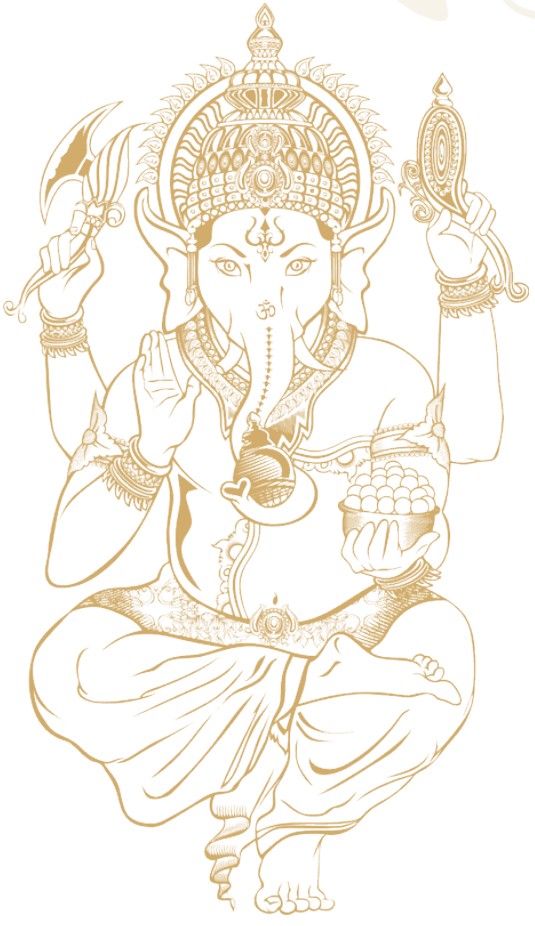

Dnyaneshwar

Bhagyashree

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121947302

पुल्लिंग :	लिंग	:	स्त्रीलिंग
04/11/1995 :	जन्म तिथि	:	25-26/12/2000
शनिवार :	दिवस	:	सोम–मंगळवार
कला 12:50:00 :	जन्म समय	:	04:02:00 कला
घटी 15:48:59 :	जन्म समय(घटी)	:	52:32:16 घटी
India :	देश	:	India
Savda :	स्थान	:	Savda
21:10:00 उत्तर :	अक्षांश	:	21:10:00 उत्तर
75:58:00 पूर्व :	रेखांश	:	75:58:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	:	82:30:00 पूर्व
कला -00:26:08 :	स्थानिक संस्कार	:	-00:26:08 कला
कला 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	:	00:00:00 कला
06:30:24 :	सूर्योदय	:	07:01:05
17:49:29 :	सूर्यास्त	:	17:51:43
23:48:02 :	लाहिरी अयनांश	:	23:51:58

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शनि 5वर्ष 7मा 28दि		15:37:07	मक	लग्न	तुला	29:42:21	केतु 0वर्ष 2मा 12दि	
शुक्र		17:35:47	तुला	सूर्य	धनु	10:35:18	रवि	
03/07/2025		12:41:35	मीन	चंद्र	धनु	12:56:56	09/03/2021	
03/07/2045		16:38:07	वृश्चि	मंगळ	तुला	07:30:38	10/03/2027	
शुक्र	02/11/2028	06:05:49	तुला	बुध	धनु	10:39:49	रवि	27/06/2021
रवि	02/11/2029	22:53:06	वृश्चि	गुरु व	वृष	08:51:47	चन्द्र	27/12/2021
चन्द्र	04/07/2031	07:17:22	वृश्चि	शुक्र	मक	26:20:08	मंगळ	03/05/2022
मंगळ	02/09/2032	24:27:47	कुंभ व	शनि व	वृष	01:00:57	राहु	28/03/2023
राहु	03/09/2035	02:43:27	तुला	राहु व	मिथु	21:35:56	गुरु	14/01/2024
गुरु	04/05/2038	02:43:27	मेष	केतु व	धनु	21:35:56	शनि	26/12/2024
शनि	03/07/2041	03:04:32	मक	हर्ष	मक	24:29:55	बुध	02/11/2025
बुध	03/05/2044	29:13:33	धनु	नेप	मक	11:15:07	केतु	10/03/2026
केतु	03/07/2045	05:56:54	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	19:40:58	शुक्र	10/03/2027

लग्न–चलित

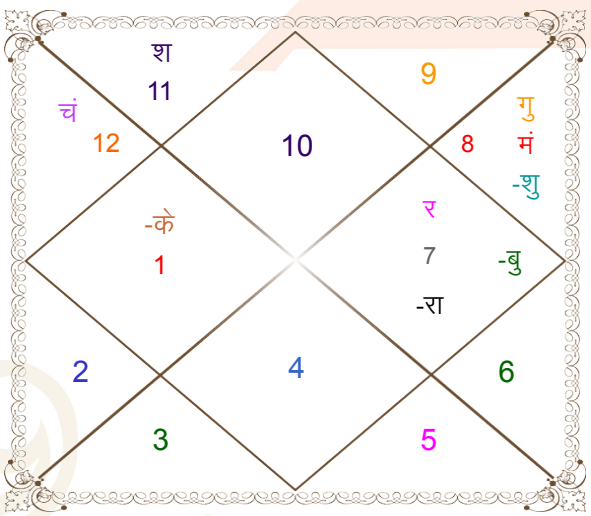

लग्न–चलित

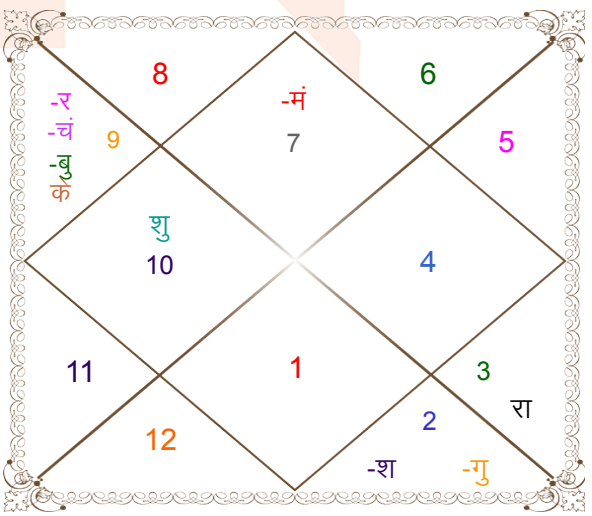

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	––	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	मानव	2	1.00	––	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	––	भाग्य
योनि	गौ	श्वान	4	2.00	––	यौन विचार
मैत्री	गुरु	गुरु	5	5.00	––	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	आह	सामाजिकता
भकूट	मीन	धनु	7	7.00	––	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	––	स्वास्थ्य/संतान
एकुण :			**36**	**25.50**		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

क्दलंदमींत का वर्ग सिंह है तथा ठींहलौतमम का वर्ग उंदीर है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार क्दलंदमींत और ठींहलौतमम का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

क्दलंदमींत मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

ठींहलौतमम मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगळ क्दलंदमींत कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

क्दलंदमींत तथा ठींहलौतमम में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।